ससी–पुन्हूँ सिन्धी गेय प्रेमाख्यान एवं उसका आध्यात्मिक संदेश

*डॉ. किशनी फुलवानी

विभाजन से पूर्व राजस्थान का समस्त पश्चिमी इलाका सिन्ध प्रदेश से जुड़ा हुआ था। जिसको थार प्रदेश के नाम से जाना जाता है। विद्वानो ने सिंन्धी भाषा की छः उपभाषाओं में से एक थरेली को इस क्षेत्र की भाषा माना है।[1] विभाजन के बाद थार रेगिस्तान का जो हिस्सा भारत की सीमा में आया वहॉ, सिन्धी संस्कृति अपने जीवन्त रूप में कायम है। यहॉ के निवासी आज भी अपनी भाषा को पर्याप्त रूप से सिन्धी और संकीर्ण अर्थ में धाटी या धटकी कहते है। थार–प्रदेश की धाटी में मारवाड़ी, गुजराती और सिन्धी शब्द मिले हुए हैं। यह मिलन स्वाभाविक रूप से हुआ है। क्योंकि थार रेगिस्तान से जोधपुर, पालनपुर रियासते, कच्छ का रेगिस्तान और सिन्ध के कुछ जिले जैसे टंडो–बागो और बदीन जुड़े हैं। इन सब स्थानों के लोगों का थार में आना जाना था। इसलिए स्वाभाविक रूप से इन सब स्थानों के शब्द थार की बोली में आ गये हैं। मेरा विषय लोक वार्ता एवं लोक संस्कृति के सामाजिक आधार को लेकर प्रेमाख्यानों से सम्बन्धित है।

भारत वर्ष में इस्लाम के प्रवेश के साथ यहाँ की भूमि पर सूफी सन्तों ने अपने कदम रखे। सूफी हृदय के उदार, प्रेम भावना में आकण्ठ निमग्न रहने वाले प्रेम के अमर उपासक और गायक थे। ये भावुक सूफी विश्व में प्रेम का अखण्ड साम्राज्य देखने के अभिलाषी थे। ये मानते हैं कि संसार में प्रेम ही सर्वोपरि उदात्त व्यापक और एक मात्र श्रेय भावना है। इस भावना को व्यक्त करने के लिए वे जहां–जहां भी गए वहां के प्रेमाख्यानों को अपने काव्य का उपजीव्य बनाया । सिन्ध में अनेक सूफी संत हुए जिन्होंने अपने काव्य में सिन्ध में प्रचलित प्रेमाख्यानों को स्थान दिया। इन प्रेमाख्यानों को काव्य रूपकों में प्रस्तुत कर आध्यात्मिक रहस्य का उद्‌घाटन किया है जिसमें आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध का निवर्चन हुआ है। ये प्रेमाख्यान निम्न प्रकार हैं।

1. डॉ. मोतीलाल जोतवानी – सिन्धी भाषा लिपि और साहित्य, राष्ट्रभाषा प्रकाशन नई दिल्ली, 1978

1. सोरठ–रावखंगार
2. उमर – मारवी
3. ससी–पुन्हूँ
4. मूमल–राणा
5. सोहिनी– महिवाल
6. नूरी–जामतमाची
7. लीला– चनेसर
8. हीर – रांझा
9. लैला– मजनूं
10. जसमा ओडणी

मैं यहॉ थार रेगिस्तान राजस्थान के पश्चिमी भाग में गाये जाने वाले एक प्रेमाख्यान ससी–पुन्हॅू का वर्णन कर उसके आध्यात्मिक पक्ष का उल्लेख करूॅगी।

ससी–पुन्हॅू :– ससी का जन्म भंमोर शहर (सिन्ध प्रान्त के जिला ठट्टा) में एक ब्राहमण के घर हुआ था। जिसका नाम नाऊ था। ससी की जन्म–पत्री बनाते समय ब्राहमण को मालूम हुआ कि इसका विवाह एक बलोच के साथ होगा।

लोक लाज के भय से नाऊ ने ससी को संदूक में बन्द कर दरिया में बहा दिया। संदूक बहती–बहती भंमोर शहर में पहुँची। दरिया के किनारे बहुत से धोबी कपड़े धो रहे थे। कपड़ों को छोड़, संदूक की तरफ भागे। एक दूसरे से सलाह कर उस संदूक को अपने मालिक महमूद धोबी के पास ले गये। महमूद धोबी, दरियाह लाल (वरूणदेव) का पुजारी था। उसके कोई संतान नहीं थी। वह रोज दरियाहपीर से संतान होने की प्रार्थना करता था।

महमूद धोबी ने जैसे ही संदूक खोली एक सुन्दर कन्या को देखकर मुॅहँ से निकला– ससी, ससी (शशि–शशि) महमूद की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। महमूद की पत्नी ने जैसे ही बच्ची को गोद में लिया उसकी छाती से दूध की धारा बहने लगी। दोनों ने बड़े लाड–प्यार से ससी का पालन .पोषण एक राजकुमारी की तरह किया। महमूद बहुत धनवान था उसने बेटी के लिए अलग कोठी बनवाई जिसमें ससी अपनी सहेलियों के साथ सैर करती रहती थी।

होनी को कोई टाल नहीं सकता। कैच मकरान से एक व्यापारी व्यापार के लिए भंभोर आया। हमेशा की तरह ससी अपनी सहेलियों के साथ बाजार गई । सामान खरीदते समय उसकी नजर एक फोटो पर अटक गई जो व्यापारी की संदूक में लगी हुई थी। ससी के मुहँ माँगी रकम पर वह फोटो व्यापारी से माँगी। व्यापारी कुछ सोचने के बाद कहने लगा कि यह फोटो मैं इस शर्त पर दूंगा, जब तुम अपना फोटो मुझे दे दो। ससी ने अपना फोटो देने की सहमती दे दी। पुन्हॅू का मित्र व्यापारी जब कैच मकरान पहुँचा तो उसने पुन्हॅू को ससी का फोटो दिखाया। पुन्हॅू देखता ही रह गया। ऐसी सुन्दर युवती उसने कभी नहीं देखी थी। फोटो को देखते ही वह कहने लगा कि इस फोटो वाली का मुझे दीदार करना है। व्यापारी ने पुन्हॅू को ससी से मिलवाने का वादा किया।

पुन्हॅू शाही ठाठ–बाठ के साथ अपने काफिले के साथ भंभोर के लिए रवाना हुआ। भंभोर पहुॅचने पर पुन्हॅू ने अपने काफिले सहित ससी के बाग में डेरा डाला। पुन्हॅू के ऊॅटों ने बाग में मेंहन्दी और चन्दन के वृक्षों को चरना शुरू कर दिया। पहरेदारों ने अपने मालिक महमूद धोबी से जाकर शिकायत की। महमूद ने ओदश दिया कि पूरे काफिले को बांध दो। काफिले के अन्य सदस्य तो भाग गये लेकिन पुन्हॅू वहीं खड़ा रहा। महमूद के आदेश से पुन्हॅू को बाग में बांध दिया गया। ससी ने उसे देखते ही पहचान लिया तो पुन्हॅू ने भी ससी को पहचान लिया। ससी ने अपने पिता से पुन्हॅू को रिहा करवा दिया।

महमूद अपनी पुत्री के हाथ शीध्र पीले करवाना चाहता था। उसने ढिन्ढोरा पिटवाया कि जो सबसे अच्छी पोशाक धोयेगा और उस पोशाक को ससी पसंद करेगी उसी से ससी का विवाह कर दिया जायेगा। सभी नवयुवक धोबी कपड़ो को बहुत अच्छी तरह धोने की कोशिश कर रहे थे, पुन्हॅू राजकुमार था उसने जैसी ही कपड़े धोने की कोशिश की घाट पर कंकर–पत्थर के कारण उसके कपड़ों में छेद हो गये। ससी यह सब देख रही थी। उसने पुन्हॅू की पोशाक को पंसद किया। इस प्रकार दोनों का विवाह हो गया।

उधर कैच मकरान में पुन्हॅू के पिता आरीजाम को बताया गया कि उसके पुत्र पुन्हॅू को भंभोर में कैद कर लिया गया। आरीजाम ने अपने बेटों को पुन्हॅू को छुड़ाने के लिए भंभोर भेजा। भंभोर में पुन्हॅू के भाईयों को पता

चला कि पुन्हूँ ने ससी नामक धोबिन से शादी कर ली है। ससी अपने देवरों को देखकर बहुत खुश हुई। उनके लिए एक बड़े भोज का आयोजन किया। भोली ससी को पता नहीं था कि ये देवर उसके बैरी है और इसी रात्रि को ही वे अपने भाई को उससे छीनकर ले जायेंगे। पुन्हूँ के भाईयों ने पुन्हूँ को शराब पिलाई और नशे की हालत में अपने ऊँटों पर पुन्हूँ को अपने साथ लेकर रवाना हो गये।

सवेरे ससी की नींद खुली तो देखा पुन्हूँ पलंग पर नहीं है न उसके देवर है और न ऊँटों का काफिला। बाहर जाकर देखा तो उसे ऊँटों के पद चिन्ह दिखाई दिये। ससी बहुत दुखी हुई वह रोने लगी। उसके देवर उसके प्रिय पुन्हूँ को अपने साथ लेकर चले गये थे। ससी के रोने और चिल्लाने पर उसके माता–पिता उसके सगे सम्बन्धी, सहेलियां सभी एकत्रित हो गये। ससी सब को बताती है कि रात को अपने देवरों द्वारा ठग ली गई है। अपने पति को ढूढ़ने के लिए जंगलों की खाक छानेगी। सभी उसे समझाते है कि तुम कभी पैदल नहीं चली हो, कभी जंगल नहीं देखा है, रास्ता नहीं जानती हों तुम कैसे पुन्हूँ को ढूंढोगी ? ससी किसी की बात नहीं सुनती । राह में उसे बहुत कष्ट सहने पड़े। उसके कपड़े चिथडे–चिथडे हो गए पैरों में खून और ऑखों में से आसुँओं की धारा बहने लगी। राह में कोई व्यक्ति दिखाई देता तो उससे पूछती कि तुमने यहाँ से जाते हुए उँटों का काफिला देखा? पुन्हूँ की खोज में ससी को कितनी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। एक दिन ससी को जंगल में एक गडरिया दिखाई दिया। भोली ससी ने उससे पुन्हूँ के शहर का रास्ता पूछा। जंगली गडरिये ने कभी ससी जैसी सुन्दर युवती नहीं देखी थी। वह सोचने लगा ईश्वर ने आज जंगल में उसके लिए लाल दुल्हन भेजी है। क्योंकि जब कभी भी अपनी मॉ से पूछता मॉ आश्वासन देती थी कि जंगल में लाल दुल्हन मिलेगी। गड़रिया ससी को अपनी दुल्हन समझ उससे वैसा व्यवहार करने लगा। ससी उसके व्यवाहर को देखकर उससे पीछा छुड़ाना चाहती थी। ससी ने गड़रिये से कहा मुझे प्यास लगी है – पानी पिलाओ। गड़रिये ने ससी को कहा कि यहॉ पानी नही हैं। ससी ने गडरिये को टूटे–फूटे कटोरे को देते हुए उससे बकरियों का दूध लाने के लिए कहा। जंगली गड़रिया अपनी दुल्हन के लिए इतना तो कर सकता था। कटोरे में एक छेद था जैसे ही वह दूध दूहने लगा, दूध बहता जा रहा था। ससी को वहॉ से भागने का मौका मिल गया। यह देखकर गड़रिया दुल्हन–दुल्हन कहता हुआ दौड़ने लगा। ससी समझ गई कि गड़रिये से दामन छुडाना मुश्किल है। अतः उसने अपनी सतीत्व की रक्षा लिए ईश्वर से प्रार्थना की। ईश्वर ने उसकी सुन ली। धरती फट पड़ी और ससी उसमें समा गई। गड़रिया ऑखे फाड़–फाड़ यह सब देखता रह गया। जब उसे होश आया तो रोते हुए कहने लगा – मेरी दुल्हन धरती में समा गई है।

कैच मकरान पहुँचने पर पुन्हूँ का नशा गायब हो चुका था। होश में आते ही वह ससी ससी बड़बड़ाने लगा। जब उसे पता चला कि वह भंभोर में नहीं बल्कि कैच मकरान में है। तो वह भी ससी ससी कहता हुआ भंभार के लिए चल पड़ा। पुन्हूँ भंभोर के लिए जिस राह से गुजरा देखा वहॉ एक गड़रिया बैठा हुआ रो रहा था। पुन्हूँ ने उससे कारण पूछा गड़रिये ने कहा– मेरी दुल्हन यहां समा गई है। देखो! उसकी चुन्नी का एक टुकड़ा बाहर रह गया है। पुन्हूँ ने देखा यह ससी की चुन्नी थी। उसी समय धरती के अन्दर से उसे आवाज सुनाई दी – **ओ पुन्हल तू पाणि सुजाण, आउं सागुणि ससुई आहियां** (प्रिय पुन्हल तुम मुझे पहचानो मैं तुम्हारी वही ससी हूँ) पुन्हूँ को पूरी बात समझ में आ गई। दुनियां में ससी के बिना वह जी कर क्या करेगा। जहॉ ससी रहेगी मैं भी वहॉ रहूँगा। पुन्हूँ ने ईश्वर से ससी के पास जाने की प्रार्थना की धरती फिर फट पड़ी और पुन्हूँ ससी के पास चला गया।

भंभोर सिन्ध पाकिस्तान के मीरपुर जिले में है। कभी यह एक समृद्ध शहर था। ससी के कारण आज भी लोग इस स्थान की जियारत करने जाते है।

ससी – पुन्हूँ गेय प्रेमाख्यान का आध्यात्मिक संदेश

इस प्रेमाख्यान में ससी की दारूण गाथ वर्णित है। ससी घोर रेगिस्तान बालू के टीलों और अंजान भयावह रास्तों ने अपने पति पुन्हूँ की तलाश में भटकती रहती है। अन्ततः उसे यह अनुभूति हुई की वह व्यर्थ का प्रलाप कर रही है। पुन्हूँ तो उसके पास ही है, उसके दिल में ही है अतः स्वयं पुन्हूँ है इस तादात्मय में सारे अन्तर मिटे जाते हैं। अपने अस्तित्व को प्रियतम के अस्तित्व में विलीन करना ही आत्मलोचन है। सूफी संत कहते हैं कि ससी और पुन्हूँ हकीकत में एक है पर अज्ञानता के कारण दो हैं। इंसान और मालिक के बीच में कोई दीवार नहीं है। जब साधक का हकीकी महबूब से मिलन हो जाता है तब इश्क, आशिक और माशुक का भेदभाव मिट जाता है। ब सवह और प्रिय मिलकर एक हो जाते है –

पेही जां पाण में, कयमि रूह रिहाण।

नको डूंगर देह में, नको केचियुनि कांण।

पुन्हूँ थियसि पाणि, ससुई तां सूर हुआ।

***पूर्व सह–आचार्य**
राजकीय महाविद्यालय
अजमेर (राज.)

संदर्भ :–

1. श्री लालसिंह हजारीसिंह ने सिन्धी साहित्य के इतिहास पृष्ठ 51 पर लिखा है कि गड़रिये ने उस स्थान पर एक मकबरा बनवाया तथा मुजावर (पुजारी) के रूप में वहां बैठ गया । यह स्थान सिन्धियों के लिए ही नहीं अपितु मुल्तान तथा दूरदराज के लोगों के लिए तीर्थ स्थान बन गया।
2. इस गेय प्रेमाख्यान को विस्तृत रूप और गेय अंशो को पढ़ने के लिए देखें – डॉ. किशनी फुलवानी खेमानी की पुस्तक भारत के सिन्ध गेय प्रेमाख्यान वर्ष 2003 अजमेर
3. श्री भैरूमल महरचन्द – सिन्धी बोलीजी तारीख नई दिल्ली